Series-12 **Topic ID:- 6510164**

Date- 10 May 2020

Important Topic

66th BPSC Preliminary Examination-2020

TOPIC:

BIHAR SPECIAL

- **पटना सत्याग्रह की कहानी:** *पटना का नखास पिण्ड/तालाब नामक स्थान 16 से 21 अप्रैल 1930 ई. तक बिहार में नमक बनाने के लिए निर्धारित किया गया था। 16 अप्रैल 1930 ई. को अंबिकाकांत सिंहा के साथ सैकड़ों सत्याग्रही निर्धारित स्थल की ओर जा रहे थे, तभी सत्याग्रहियों के एक दल को पुलिस ने सुल्तानगंज के पास रोक लिया और उन पर जमकर लाठियाँ बरसाई। अंबिकाकांत सिंहा और 20 अन्य सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस उत्पीड़न के बावजूद बाकी के सत्याग्रही दिन भर डटे रहे और रात में वहीं सड़क पर ही सो गये। लगातार 6 दिनों तक यही क्रम चलता रहा। इसी सत्याग्रह के दौरान एक दिन सत्याग्रहियों का नेतृत्व कर रहे अब्दुल बारी को भी पुलिस ने बुरी तरह पीटा। पुलिस की इतनी ज्यादतियों के बावजूद बिहारी सत्याग्रहियों के जोश और उत्साह में कोई कमी नहीं आई।*
- ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध अंन्तिम निर्णायक लड़ाई लड़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प ने पहली बार भारतीय जनसमुदाय की स्वतंत्रता संघर्ष की बागडोर अपने हाथों में लेने के लिए विवश किया। यह पहला अवसर था जब बिहारियों ने परम्परागत संघर्ष का तरीका छोड़कर विवेकानुसार अंग्रेजों के विरूद्ध आर-पार की लड़ाई लड़ी। इस महान जन आन्दोलन में बिहार के योगदान को चीरकाल तक भुलाया नहीं जा सकता।

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

Pdf is available on - http://t.me/biharnaman

BIHAR SAMANYA VIVARNIKA From The Book

- 9 अगस्त 1942 को गाँधीजी के साथ बिहार के राजेंद्र प्रसाद, मथुरा प्रसाद, फुलेना प्रसाद वर्मा, अनुग्रह नारायण सिंह को भी गिरफ्तार किया गया। इसी दिन एक अध्यादेश लागू करके ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस को गैर-कानूनी घोषित कर दिया। बिहार प्रांतीय कमिटी, अखिल भारतीय चरखा संघ (बिहार शाखा), खद्दर भंडार और बिहार केन्द्रीय सहायता कोष के खातों को भी सरकार ने जब्त कर लिया। 10 अगस्त 1942 को पुलिस ने सदाकत आश्रम, जिला कांग्रेस कार्यालय (नया कदमकुंआ) को भी जब्त कर लिया। सरकार के इस दमनात्मक नीति के विरोध में बिहार की जनता में अधिक रोष उत्पन्न हुआ। वे जगह-जगह राष्ट्रीय झंडा फहराने लगे और इस क्रम में लोगों की गिरफ्तारी भी हुई। 11 अगस्त, 1942 ई. को पटना की स्थिति काफी तनावपूर्ण थी। उस दिन विद्यार्थियों के एक जुलूस ने सचिवालय भवन के सामने विधायिका की इमारत पर राष्ट्रीय झंडा फहराने की कोशिश की। पटना के तत्कालीन जिलाधीश डब्लू.जी. आर्चर के आदेश पर उस जुलूस पर अंधाधुँध गोलियाँ चलाई गई जिसमें सात छात्र शहीद हो गए। शहीद छात्रों के नाम इस प्रकार हैं:

1. **उमाकान्त प्रसाद सिंह**- सारण जिले के नरेन्द्रपुर ग्राम का निवासी जो राममोहन राय सेमीनरी स्कूल पटना का 12वीं कक्षा का छात्र था।
2. **रामानन्द सिंह**- यह भी राममोहन राय सेमीनरी स्कूल का 11वीं कक्षा का छात्र था। इनका जन्म पटना जिले के शहादत नगर में हुआ था।
3. **सतीश प्रसाद झा**- ये भागलपुर जिले के खडहरा जिले में जन्मे पटना कॉलेजिएट स्कूल के ग्यारहवीं कक्षा के छात्र थे।
4. **जगपति कुमार**- इनका जन्म गया जिले के खराठी गाँव में हुआ था।
5. **देवीपद चौधरी**- इनका जन्म सिलहर जिले के जमालपुर गाँव में हुआ। वे मीलर हाईस्कूल के 9वीं कक्षा के छात्र थे।
6. **राजेन्द्र सिंह**- पटना हाईस्कूल के 11वीं कक्षा के छात्र जिनका जन्म सारण जिले के बनवारी चक गाँव में हुआ था।
7. **राय गोविन्द सिंह**- ये पटना जिले के दशरथ ग्राम में जन्में पुनपुन हाईस्कूल के 11वीं कक्षा के छात्र थे।

From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA
BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Pdf is available on - http://t.me/biharnaman
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

- 22 अक्टूबर 1764 ई. के बक्सर के युद्ध में त्रिगुट (अवध के नवाब शुजाउद्दौला, मुगल बादशाहशाह आलम-द्वितीय और बंगाल के निष्कासित नबाव मीर कासिम) के हारने के बाद (अंग्रेजों ने त्रिगुट को हराया) 12 अगस्त 1765 ई. को मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा का दीवानी अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया।
- 'The Partision of the lower provinces: An Alternative pro posal' सच्चिदानंद सिन्हा द्वारा फरवरी 1904 में हिन्दुस्तान रिब्यू के लिए लिखा गया यह लेख वास्तव में बिहार के बंगाल से पृथक्करण पर जोर देता है। महेशनारायण ने भी अगस्त 1905 के हिन्दुस्तान रिब्यू में इसी प्रकार का विचार व्यक्त करते हुए एक लेख लिखा। इन दोनों लेखों को मिलाकर जनवरी 1906 ई. में एक पुस्तक का प्रकाशन किया गया। जिसका नाम था-'' पार्टिशन ऑफ बंगाल और सेपरेशन ऑफ बिहार।'' इस पुस्तक ने बिहारवासियों तथा कलकत्ता में पढ़ रहे बिहारी छात्रों में अपूर्व उत्साह पैदा किया। इसी समय राजेन्द्र प्रसाद कलकत्ता के बिहारी क्लब के सचिव थे। उनके प्रयास से 1906 ई. के दशहरा में बैरिस्टर शर्फुद्दीन के सभापतित्व में पटना कॉलेज (पटना) में पहली बार प्रथम बिहारी छात्र सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में बिहार के सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्रों की उपस्थिति देखी गई। इस सम्मेलन ने बिहार में एक नये जन जागरण का सूत्रपात किया
- बिहार में जन्मा जैन संप्रदाय धार्मिक सुधार के परम शक्तिशाली आंदोलन के रूप में उभरा। यह एक प्रतिक्रियावादी धर्म है। जैन धार्मिक विचार के अनुसार ऋषभदेव से महावीर तक जैन धर्म के 24 तीर्थंकर हुए (तीर्थकर का तात्पर्य है- जो व्यक्ति अन्य लोगों को सत्मार्ग दिखाए)। इन 24 तीर्थंकरों में 12 वें तीर्थंकर वसुपूज्य, 19वें तीर्थंकर मल्लिकनाथ, 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ, 21 वें तीर्थंकर नेमिनाथ और 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म बिहार में हुआ था। महावीर ने अपनी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए जैन संघ का गठन किया। उन्होंने समस्त अनुयायियों को 11 गणों में विभक्त किया तथा प्रत्येक गण में एक प्रधान (गणधर) नियुक्त कर उसे धर्म प्रचार का उत्तरादायित्व सौंपा। महावीर स्वयं इन गणधरों/प्रधान के साथ घूम-घूमकर जैन दर्शन का प्रचार करते थे। उन्होंने स्वयं अंग, मगध और मिथिला में भ्रमण कर जैन धर्म को जनप्रिय बनाया। जैन संघ के सदस्यों को चार वर्गों में विभाजित किया गया। ये है-भिक्षु, भिक्षुणी, श्रावक एवं श्राविका भिक्षु और भिक्षुणी सन्यासी जीवन व्यतीत करते थे जबकि श्रावक एवं श्राविका को गृहस्थ जीवन व्यतीत करने की स्वीकृति थी।
- 10वीं सदी हिजरी में मनेर शरीफ के हज़रत मख्दूम शाह दौलत के प्रयासों से फिरदौसिया सिलसिला को इतनी प्रसिद्धि मिली कि अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में मुगलिया शासन के कई गवर्नर व विशिष्ट अधिकारी इस सिलसिला के सिद्धांत को स्वीकार कर साधक हुए। वर्तमान नालन्दा जिला का बिहार शरीफ सब-डिविजन जो कभी बौद्ध विहारों के कारण बिहार कहलाने लगा था, हज़रत मख्दूम के जीवन में सूफियों की खानकाहों, चिल्लों और तकियों के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्धि प्राप्त कर लिया। बिहार शरीफ में हज़रत मख्दूम जहाँ शर्फुद्दीन याह्या मनेरी (स्वर्गवास 782 हिज़री या 1381 ई.) के प्रवास ने सम्पूर्ण इस्लामी जगत के नक्शें पर बिहारशरीफ को केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया। सिकन्दर लोदी, शेरशाह, सुलेमान किरानी, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब, शाह आलम द्वितीय जैसे प्रसिद्ध शासकों ने व्यक्तिगत रुप से बिहार शरीफ के मनेरी

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
Pdf is available on - http://t.me/biharnaman
From The Book BIHAR SAMANYA VIVARNIKA

मज़ार पर चादर चढ़ाया था। यह बिहार में सर्वाधिक प्रसिद्ध/लोकप्रिय सिलसिला रहा।

- 18वीं सदी के प्रारंभ में ईसाई धर्म प्रचारकों ने धर्म के प्रसार के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार का भी कार्य शुरु किया। पटना के दो पादरी फादर डोमिनीक और फादर फ्रांसीस ने ईसाई धर्म का प्रचार करने के उद्धेश्य से 1707 ई. में नेपाल और तिब्बत की यात्राएँ की। 1713 ई. में पटना सिटी में ईसाइयों के पहले प्रार्थना घर (चर्च) की स्थापना हुई। आज भी यह इमारत और इसके आस-पास का इलाका पादरी की हवेली के नाम से जाना जाता है।
- 1908 ई. में पटना में **'प्रथम बिहार राज्य सम्मेलन'** का आयोजन किया गया जिसके अध्यक्ष **अली इमाम** थे। इस सम्मेलन में सर मुहम्मद फखरूद्दीन ने 'पृथक बिहार' की माँग करते हुए एक प्रस्ताव पास किया जिसे वहां उपस्थित सभी लोगों ने पूरा समर्थन दिया।
- बांकीपुर, पटना में एक सभा को संबोधित करते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. श्री राजेन्द्र प्रसाद ने सर अली इमाम को बाबा-ए-जदीद बिहार (FATHER OF MODERN BIHAR) का खिताब दिया था।
- कर्णाट वंश के संस्थापक **नान्यदेव** एक साहसिक योद्धा, बुद्धिमान राजनीतिज्ञ के साथ-साथ साहित्य और कला के अग्रणी संरक्षक थे। इन्होंने ही **'सरस्वती हृदयलंकार'** नामक एक ग्रंथ की रचना की जो **भारतीय संगीत शास्त्र का एक मानक ग्रंथ** माना जाता है। इन्हें मिथिला में अनेक लोकरागों को भी विकसित करने का श्रेय प्राप्त है।
- नारायण सिंह पवई राज (वर्तमान औरंगाबाद जिला) के राजा थे। ये बिहार के पहले ऐसे योद्धा व स्वतंत्रता सेनानी हुए जिन्होंने मंगल पांडे से पूर्व ही ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध कड़ा विद्रोह किया था। औरंगाबाद के तत्कालीन जिलाधिकारी रेगिनाल्ड हैन्ड ने अपनी किताब 'Early English Administration' में नारायण सिंह को 'अंग्रेजों का प्रथम शत्रु' बताया है।
- जमींदारों ने अपने हितों की सुरक्षा के लिए 1838 ई. में **'लैण्ड होल्डर्स एसोसिएशन या जमींदारी संघ'** की स्थापना की। यह संघ ब्रिटिश सरकार का जमीदारी प्रथा में बढ़ते प्रभाव से सुरक्षा प्रदान करने का कवच था। वस्तुत: यह बिहार का प्रथम राजनीतिक संगठन था।
- वर्ष 1934 में कांग्रेस के अन्दर **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी/कांग्रेस समाजवादी पार्टी** की स्थापना हुई। **बिहार में जयप्रकाश नारायण और अब्दुल बारी इसके अग्रणी नेता थे**। यह पार्टी मजदूरों की आम समस्याओं पर विशेष ध्यान देता था।
- औरंगाबाद स्थित देव सूर्य मंदिर की विशेषता यह है कि इसका मुख्य द्वार पश्चिम की ओर खुलता है जबकि मंदिरों का प्रवेश द्वारा प्राय: पूरब दिशा में होता हैं। इस मंदिर के सभा मंडप का निर्माण उमंग के अंतिम चंद्रवंशी राजा भैरवेन्द्र ने करवाया था।
- बिहार के भागलपुर जिला में स्थित विक्रमशिला अभ्यारण्य भारत का पहला व एकमात्र गंगेटिक डाल्फिन अभ्यारण्य है जो गंगा नदी में सुल्तानगंज से कहलगांव तक 50 कि॰मी॰ की दूरी तक फैला है। बिहार सरकार द्वारा 1990 ई॰ में इसे डाल्फिन अभ्यारण्य के रूप में मान्यता प्रदान की गयी थी। इस अभ्यारण्य में कछुआ, घड़ियाल और मछली की अनेको प्रजातियाँ पायी जाती है। यह अभ्यारण्य IUCN के लाल सूची में दर्ज सारस पक्षी का प्रजनन स्थल भी है। यहाँ डाल्फिन मछलियों की संख्या 250 से 500 के बीच है।

BIHAR SAMANYA VIMARNIKA
From The Book
BIHAR SAMAN PUBLISHING HOUSE
Pdf is available on - http://t.me/biharnaman
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE

- बिहार भारत का एक स्थलरूद्ध राज्य है। पश्चिम चम्पारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया तथा किशनगंज (कुल 7 जिले) नेपाल के साथ, किशनगंज, पूर्णिया तथा कटिहार (कुल 3 जिले) पश्चिम बंगाल के साथ, कटिहार, भागलपुर, बांका जमुई, नवादा, गया, औरंगाबाद तथा रोहतास (कुल 8 जिले) झारखंड के साथ और पश्चिम चंपारण, गोपालगंज, सिवान, सारण, आरा, बक्सर, कैमूर तथा रोहतास (कुल 8 जिले) उत्तर प्रदेश के साथ अंतर्राज्यीय सीमा बनाते हैं। इस प्रकार बिहार के कुल 22 जिले (कुछ ऐसे भी जिले है जिनकी सीमा एक से अधिक राज्यों/ देश के साथ लगती है। उन जिलों की पुनरावृत्ति नही की गई है।) अंतर्राज्यीय/ अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटे है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बिहार का सबसे छोटा जिला शिवहर (443 वर्ग कि. मी.) है। इसके बाद क्रमशः अरवल (637 वर्ग कि. मी.), शेखपुरा (689 वर्ग कि. मी.) तथा लखीसराय (1229 वर्ग कि. मी) आता है।

- सोमेश्वर श्रेणी बिहार की सबसे उत्तरी श्रेणी है, जिसकी लम्बाई 74 कि.मी. और बिहार में चौड़ाई 5 से 6 कि.मी. तक है। भारत और नेपाल के बीच की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा इस श्रेणी की चोटी के सहारे गुजरती है। यह पहाड़ी श्रृंखला पश्चिम में त्रिवेणी नहर के शीर्ष भाग से लेकर पूर्व में भिखनाठोरी दर्रा (पश्चिम चंपारण) तक जाती है। इसकी ऊँचाई दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ती जाती है, किन्तु पश्चिमी चम्पारण में इसकी औसत ऊँचाई 457 मीटर है। इसकी सर्वोच्च चोटी पर सोमेश्वर किला स्थित है, जिसकी ऊँचाई 880 मीटर है।
- बिहार में कृषि व ग्रामीण विकास में इस बैंक का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि, व्यापार, वाणिज्य तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य उत्पादक गतिविधियों के लिए, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों, खेतिहर मजदूरों, दस्तकारों और छोटे उद्यमियों और उनसे संबंधित मामलों के लिए ऋण और अन्य सुविधाओं के विकास के उद्देश्य से वर्ष 1975 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना की गई थी। इस बैंक के कुल पूँजी में 50 प्रतिशत अंश केन्द्र सरकार का 15 प्रतिशत अंश बिहार सरकार का तथा 35 प्रतिशत अंश प्रायोजित बैंक का होता है। इसे रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के

Pdf is available on - http://t.me/biharnaman
Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
From The Book BIHAR SAMANYA WWW

दूसरी अनुसूची में सम्मलित किया गया है। इस बैंक पर नाबार्ड (NABARD- National Bank for Agriculture and Rural Development) का नियंत्रण होता है।

AVAILABLE TEST SERIES(Bilingual)-

- **66TH BPSC PT TEST SERIES-2020(is going on)**
- **65th BPSC MAINS TEST SERIES-2020(Available Soon)**

What's app- 9355167891, Mob- 8368040065
Email- biharnaman@gmail.com

From The Book BIHAR SAMANYA VIHARNIKA

- भारत शासन अधिनियम 1935 के प्रावधान के तहत बिहार में विधायिका के गठन हेतु अप्रैल 1936 में पटना में एक चुनाव कार्यालय स्थापित किया गया। बिहार में 22 जनवरी 1937 से 29 जनवरी 1937 के बीच चुनाव संपन्न हुए। कांग्रेस ने विधानसभा के कुल 152 स्थानों में से 107 स्थानों के लिए अपने उम्मीदवारों को चुनाव में खड़ा किया जिसमें से 98 स्थानों पर कांग्रेसी उम्मीदवार विजयी रहे। मुस्लिम इंडिपेंडेंट पार्टी 20 सीटों के साथ बिहार विधान सभा में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। अन्य राजनीतिक दलों के 10 तथा 24 निर्दलीय उम्मीदवारों को भी इस चुनाव में सफलता मिली। इस चुनाव की विशेष बात यह रही कि 59.2% मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था जो तत्कालीन ब्रिटिश संसद के लिए होने वाली मतदान प्रतिशत के लगभग बराबर था।
- बिहार में राज्यपाल बिहार राज्य की कार्यपालिका का अध्यक्ष व राज्य का संवैधानिक प्रमुख होता है। 1920 में पहली बार ब्रिटिश कालीन बिहार प्रांत के लिए गवर्नर पद का प्रावधान किया गया। इससे पूर्व ब्रिटिश भारत में बिहार के शासन की बागडोर सपरिषद गवर्नर द्वारा संभाली जाती थी जिसके तहत 1912 से 1920 तक बिहार में शासन का प्रधान उपराज्यपाल बना रहा। भारतीय संविधान के 7वें संविधान संशोधन अधिनियम 1956 के द्वारा यह प्रावधान किया गया कि कोई भी राज्यपाल आवश्यकता पड़ने पर अथवा केन्द्र सरकार द्वारा दिए गए अनुदेश के आधार पर एक अथवा एक से अधिक राज्यों के राज्यपाल का पदभार अस्थायी तौर पर संभाल सकता है। यह नियम बिहार के राज्यपाल पर भी लागू होता है। पटना उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए मृत्युदंड की सजा की स्थिति में उसे रोकने अथवा क्षमा करने का अधिकार केवल भारत के राष्ट्रपति को है न कि किसी राज्य के राज्यपाल को।

BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE
(Approved By: Govt. Of India)
Facebook- BIHAR NAMAN
Telegram- http://t.me/biharnaman

Pdf is available on - http://t.me/biharnaman

Copyright@ BIHAR NAMAN PUBLISHING HOUSE